डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part-1
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - I

Date - 17-02-2022

कबीरदास के भक्ति-पद (भाग-2)

देखा देखी भक्ति का,
कबहुं न चढ़सी रंग।
विपत्ति पड़े छाड़सी,
कैचुली तजत भुजंग॥

भावार्थ :—

ईश्वर की सत्ता तथा जीवन के मर्म को समझना अत्यंत आवश्यक है। इन बातों को समझे बैगर सच्चा भक्त होना बहुत मुश्किल है। भक्ति क्षेत्र कोई मेला या तमाशा नहीं है कि लोग कर रहे है हम भी करे। किसी सच्चे भक्त की देखा देखी की गई झूठी भक्ति कभी भी ना तो अपना रंग दिखाती है और ना ही ऐसी भक्ति फलदायक होती है। ऐसे लोग जो भक्त होते नहीं है सिर्फ संसार को दिखाने के लिए भक्त होने का ढ़ोग करते हैवो विपत्ति आने पर भक्ति को वैसे ही छोड़ देते है जैसे साँप समय-समय पर अपनी कैंचुली को उतार देता है। इसी प्रकार नकली भक्त भी जब मन में आता है तब भक्ति में शामिल हो जाते है और जब मन में आता है तब उसे छोड़ देते है जबकि सच्चा भक्त हर घड़ी सुख और दुख में अपने ईश्वर का सुमिरन करते ही रहता है।

Scanned by CamScanner